IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

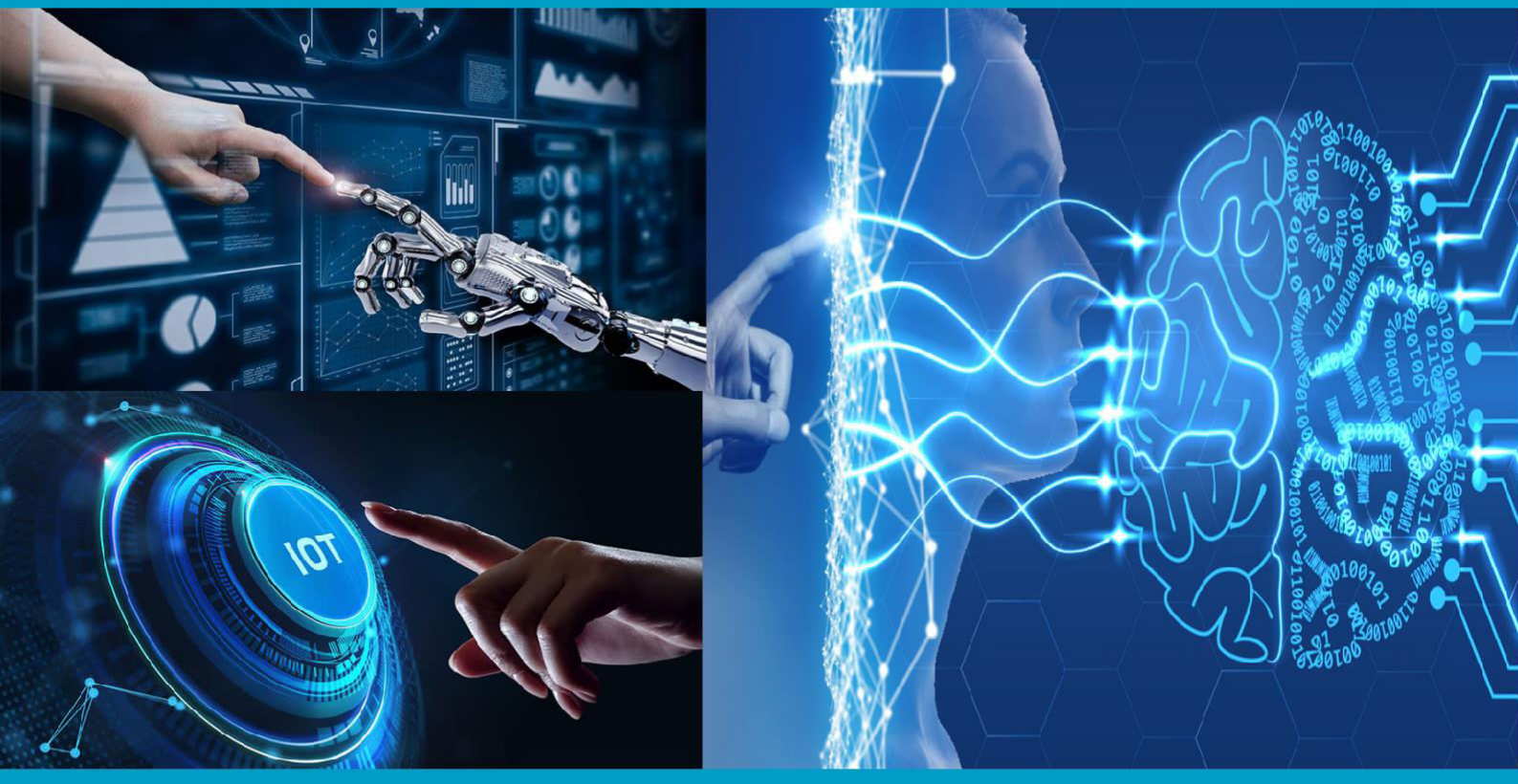

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 10, Issue 6, June 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में भारतीय संस्कृति

डॉ.सोहनराज परमार

आचार्य-हिन्दी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाड़मेर, राजस्थान

सार

स्वदेश प्रेम या राष्ट्रीय चेतना। राष्ट्रीय चेतना का अत्यन्त उदात्त स्वर माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में मिलता है । वे कवि के रूप में "भारतीय आत्मा" के नाम से विख्यात थे, उनका काव्य सच्चे अर्थो में भारतीय आत्मा की अभिव्यक्ति है। "भारतीय आत्मा" का समस्त जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित रहा ।

परिचय

“जाओ, जाओ, जाओ प्रभु को पहुँचाओ स्वदेश संदेश।

गोली से मारे जाते हैं भारतवासी हे सर्वेश ॥“

ये पंक्तियाँ सन १९२० में जालियांवाला हत्याकाण्ड के संदर्भ में शहीदों को याद करते हुए माखनलाल चतुर्वेदी जी लिखते हैं। मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन और रामधारी सिंह दिनकर आदि हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख स्तम्भ हैं। माखनलाल चतुर्वेदी जी समसामयिक युगद्दष्टा एवं राष्ट्रीय स्वर को उजागर करनेवाले सच्चे राष्ट्रीय कवि थे। उनके काव्य में अनन्य देश-प्रेम और निश्चल समर्पण की भावना है। यही देश-प्रेम कालांतर में उनके जीवन का एक शक्तिशाली स्वर बन गया। ‘पुष्प की अभिलाषा’ उनकी सर्वाधिक चर्चित कविता रही और इसके लिए उन्हें सागर विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट. की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। इसके अलावा अपने काव्य संग्रह ‘हिम तरंगिणी’ के लिए उन्हें सन् 1955 में ‘साहित्य अकादमी’ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। देश-प्रेम से ओत-प्रोत उनकी कविता ’पुष्प की अभिलाषा’ को कोई कभी नहीं भूल सकता –

“ चाह नहीं मैं सुरबाला के, गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं, प्रेमी-माला में, बिंध प्यारी को ललचाऊँ
चाह नहीं, सम्राटों के शव, पर हे हरि, डाला जाऊँ
चाह नहीं, देवों के सिर पर, चढ़ भाग्य पर इठलाऊँ
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक ॥“

माखनलाल चतुर्वेदी और अन्य नेता आजादी के लिए वे बहुत चिंतित थे. लगातार इस दिशा में चिंतन-मनन करते रहे। इसी कारण 1908 में हिन्द केसरी में आयोजित ’राष्ट्रीय आंदोलन और बहिष्का’ निबंध प्रतियोगिता में उनको पहला स्थान मिला। ’मेरा भारत देश महान’ के अनुसार माखनलाल जी हमेशा अपने देश को महान ही समझा है।[1,2,3] अपने देश और गरिमामयी संस्कृति का वर्णन अपनी कविता ’प्यारे भारत देश’ में इस प्रकार किया-

“प्यारे भारत देश
गगन-गगन तेरा यश फहरा
पवन-पवन तेरा बल गहरा
क्षिति-जल-नभ पर डाल हिंडोले
चरण-चरण संचरण सुनहरा

ओ ऋषियों के त्वेष
प्यारे भारत देश॥“

माखनलाल चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य में ’एक भारतीय आत्मा’ के नाम से प्रख्यात हैं। स्वतंत्रता संग्राम की ओर आकर्षित होकर गांधीवाद से प्रभावित हो गए। स्वतंत्रता-संग्राम के सक्रिय सेनानी होने के कारण कई बार इनको जेल भी जाना पडा। इनकी कविता में अनुभूति, भावना, आदर्श, त्याग, राष्ट्र-प्रेम, समाज-कल्याण आदि का बडा महत्व है। महात्मा गांधी जी की सत्य-अहिंसा, तिलक की बलिदान भावना और कविवर रवींद्र की मानवपूजा आदि इनके काव्य के आधार-तत्व हैं।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

उन्होंने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी आवाज़ को बुलंद किया और युवाओं से देश की स्वतंत्रता के लिए मर-मिटने का आह्वान किया। उनकी रचनाओं में सशक्त भावनाओं को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। पत्रकारिता के क्षेत्र में एक नया बदलाव माखनलाल जी से ही प्रारंभ हुआ है।[5,7,8]

माखनलाल चतुर्वेदी जी का जीवन असामान्य था, उनका संपूर्ण जीवन ही देश के लिए समर्पित था। जैसे स्वामी विवेकानंद को एक कोरा सन्यासी, महात्मा गाँधी जी को कोरा राजनेता कहकर टाला नहीं जा सकता, ठीक उसी प्रकार पंडित माखनलाल चतुर्वेदी को कोरा साहित्यकार या पत्रकार कह कर नहीं टाला जा सकता है। पंडित माखनलाल चतुर्वेदी का अदभूत व्यक्तित्व स्वतंत्र सेनानी, विशुद्ध साहित्यकार, क्रन्तिकारी कवि एवं निर्भीक पत्रकार की मिली-जुली रेखाओं से बनता है। वे कर्म से योद्धा, बुद्धि से चिन्तक, दिल से कवि स्वाभाव से संत और अद्भूत बेजोड़ प्रवक्ता थे। उनका सम्पूर्ण जीवन और चिंतन भारतीय समाज की रक्षा करने और संवारने के सन्दर्भ में अभिव्यक्त हुआ है। माखनलाल जी का जीवन जन-साधारण-सा नहीं था। उनके व्यक्तित्व के विकास के कारण सामान्य परिवार में जन्म और संघर्षपूर्ण जीवन था। वे अपने संघर्षरत जीवन के बारे में कहते हैं कि-

“सूली का पथ ही सीखा हूँ, सुविधा सदा बचाता आया।

मैं बलि पथ का अंगारा हूँ, जीवन ज्वाला जलाता आया॥”

माखनलाल एक कुशल वक्ता भी थे। जब वे बोलते थे तो लोग शांत हो जाते थे। उनके वक्तृत्व कला पर महात्मा गांधी भी मुग्ध थे। उन्होंने एक बार टिप्पणी की थी-‘हम सब लोग तो बात करते है, बोलना तो माखनलाल जी ही जानते है।’ सन् 1933 में मध्यप्रदेश में महात्मा गांधी जी के हरिजन दौरे के समय बाबई पहुंचे थे। तब उन्होंने कहा था- मैं बाबई जैसे छोटे स्थान पर इसलिए जा रहा हूँ क्योंकि वह माखनलाल जी काजन्म स्थान है। जिस भूमि ने माखनलाल जी को जन्म दिया है, उसी भूमि को मैं सम्मान देना चाहता हूं।’ माखनलाल जी अपने से भी ज्यादा हमेशा देश को ही चाहा है, प्राणों की चिन्ता तो उन्हें कभी थी ही नहीं। इसलिए उनकी ’कैसी है पहिचान तुम्हारी’ कविता की पंक्तियाँ याद आती हैं –

कैसी है पहिचान तुम्हारी,
राह भूलने पर मिलते हो![9,10,11]

प्राण, कौन से स्वप्न दिख गये,
जो बलि के फूलों खिलते हो।
कैसी है पहिचान तुम्हारी,
राह भूलने पर मिलते हो॥

‘एक भारतीय आत्मा’ नाम माखनलाल जी के लिए अत्यंत योग्य उपनाम है। क्योंकि ‘एक भारतीय आत्मा’ उस व्यक्ति का नाम है जिसने भारत और भारतीयता की अस्मिता को पूरी तरह आत्मसात कर उसकी रक्षा में अपनी रचनाधर्मिता को समर्पित करनें में विश्वास किया। ‘एक भारतीय आत्मा’ ऐसा नाम है, जिसने भारत की परतंत्रता को स्वीकार करने के बजाय उसकी स्वतंत्रता के लिए कारावास का कष्ट झेलने में भी सुख का अनुभव किया। भारतीय आत्मा शब्द का संकेत है कि भारत मेरा देश है और मैं इसकी आत्मा हूं। यह एक ऐसा उपनाम है जो कवि के मानस में व्याप्त भारत देश पर अपने नैसर्गिक अधिकार को दर्शाता है। सच में माखनलाल जी में देश-प्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ था, अपने आप को और देश के सभी जवानों को सिपाही मानते थे। उनकी ’सिपाही’ कविता की कुछ पंक्तियाँ देखेंगे तो देश-प्रेम उमढ आयेगा-

बोल अरे सेनापति मेरे!
मन की घुंडी खोल,
जल, थल, नभ, हिल-डुल जाने दे,
तू किंचित् मत डोल !
दे हथियार या कि मत दे तू
पर तू कर हुंकार,
ज्ञातों को मत, अज्ञातों को,
तू इस बार पुकार!
धीरज रोग, प्रतीक्षा चिन्ता,
सपने बनें तबाही,
कह `तैयार'! द्वार खुलने दे,
मैं हूँ एक सिपाही !

माखनलाल जी के काव्य में बलिदान, समर्पण, विद्रोह, गांधीवादी दृष्टि, वीर-पूजा तथा प्रेम-आराधना के स्वर प्रमुख है। देश की स्वतंत्रता के लिए कृतसंकल्प लोकमान्य बालगंगाधार तिलक से दादा माखनलाल प्रभावित थे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के संपर्क में

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

आने के बाद वे स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। वे कई बार जेल गए। बिलासपुर में सन् 1922 में भड़काऊ भाषण देने के लिए उन्हें जेल जाना पड़ा। इसी दौरान उन्होंने बिलासपुर जेल में 'पुष्प की अभिलाषा' कविता की रचना की। उन्होंने अपनी रचना से जनमानस को स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए उत्प्रेरित किया। कर्मवीर में उनके द्वारा लिखे गए लेखों ने अंग्रेज सरकार की नींद उड़ा दी थी। माखनलाल जी का मानना था कि विदेशी शोषण और अत्याचार के खिलाफ जिस व्यक्ति के हृदय में ज्वाला न धधके तो वो कैसा भारतीय है? उसका जीवन ही निरर्थक है, वह मृत सदृश है-

"द्वार बलि का खोल

चल भूडोल कर दे

एक हिम-गिरि एक सिर

का मोल कर दें,

मसलकर, अपने इरादों-सी, उठाकर,

दो हथैली हैं कि

पृथ्वी गोल कर दें

रक्त है या है नसों में क्षुद्र पानी।

जांच कर, तू सीस दे-देकर जवानी।"[8,9]

भाषा और शैली की दृष्टि से माखनलाल पर आरोप किया जाता है कि उनकी भाषा बड़ी बेड़ौल है। उसमें कहीं-कहीं व्याकरण की अवेहना की गयी है। भाषा-शिल्प के प्रति माखनलाल जी बहुत सचेष्ट रहे हैं। उनके प्रयोग सामान्य स्वीकरण भले ही न पायें, उनकी मौलिकता में सन्देह नहीं किया जा सकता। चतुर्वेदी जी एक लोकप्रिय कवि, एक दिग्गज पत्रकार और हिंदी के कुशल लेखक थे।

माखनलाल चतुर्वेदी सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के अनूठे हिन्दी रचनाकार थे। राष्ट्रीयता माखन लाल चतुर्वेदी के काव्य का कलेवर है तथा रहस्यात्मक प्रेम उसकी आत्मा है। 30 जनवरी सन् 1968 को साहित्य जगत का यह सितारा संसार से सदा के लिए ओझल हो गया। अब तो उनकी स्मृति ही शेष है। दादा माखनलाल जीवनभर पतझड़ झेलते रहे, पर दूसरों के लिए हमेशा बसंत की कामना की। वे एक ऐसे क्रांतिदृष्टा थे, जिन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में संघर्ष किया। ऐसे 'एक भारतीय आत्मा' को शत् शत् नमन करते हुए आइए उनकी कविता 'दीप से दीप जले' के अनुसार देश-प्रेम का, मानवता का दीप जलाएँ-

" सुलग-सुलग री जोत दीप से दीप मिलें
कर-कंकण बज उठे, भूमि पर प्राण फलें।

युग के दीप नए मानव, मानवी ढलें
सुलग-सुलग री जोत! दीप से दीप जलें[7,8]

विचार-विमर्श

माखनलाल चतुर्वेदी (4 अप्रैल 1889-30 जनवरी 1968) भारत के ख्यातिप्राप्त कवि, लेखक और पत्रकार थे जिनकी रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय हुईं। सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के वे अनूठे हिंदी रचनाकार थे। प्रभा और कर्मवीर जैसे प्रतिष्ठत पत्रों के संपादक के रूप में उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया और नई पीढ़ी का आह्वान किया कि वह गुलामी की जंज़ीरों को तोड़ कर बाहर आए। इसके लिये उन्हें अनेक बार ब्रिटिश साम्राज्य का कोपभाजन बनना पड़ा।[1] वे सच्चे देशप्रेमी थे और १९२१-२२ के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए जेल भी गए। [5,7]उनकी कविताओं में देशप्रेम के साथ-साथ प्रकृति और प्रेम का भी चित्रण हुआ है, इसलिए वे सच्चे अर्थों में युग-चारण माने जाते हैं।[2]

श्री माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में बाबई[3] नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता का नाम नंदलाल चतुर्वेदी था जो गाँव के प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक थे। प्राथमिक शिक्षा के बाद घर पर ही इन्होंने संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी, गुजराती आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। मात्र 16 वर्ष की आयु में शिक्षक बने[3,5]

माखनलाल चतुर्वेदी का तत्कालीन राष्ट्रीय परिदृश्य और घटनाचक्र ऐसा था जब लोकमान्य तिलक का उद्घोष- 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' बलिपंथियों का प्रेरणास्रोत बन चुका था। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के अमोघ अस्त्र का सफल प्रयोग कर कर्मवीर मोहनदास करमचंद गाँधी का राष्ट्रीय परिदृश्य के केंद्र में आगमन हो चुका था। आर्थिक स्वतंत्रता के लिए स्वदेशी का मार्ग चुना गया था, सामाजिक सुधार के अभियान गतिशील थे और राजनीतिक चेतना स्वतंत्रता की चाह के रूप में सर्वोच्च प्राथमिकता बन गई थी। ऐसे समय में माधवराव सप्रे के 'हिंदी केसरी' ने सन १९०८ में 'राष्ट्रीय आंदोलन और बहिष्कार' विषय पर निबंध प्रतियोगिता

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

का आयोजन किया। खंडवा के युवा अध्यापक माखनलाल चतुर्वेदी का निबंध प्रथम चुना गया। अप्रैल १९१३ में खंडवा के हिंदी सेवी कालूराम गंगराड़े ने मासिक पत्रिका 'प्रभा' का प्रकाशन आरंभ किया, जिसके संपादन का दायित्व माखनलालजी को सौंपा गया। सितंबर १९१३ में उन्होंने अध्यापक की नौकरी छोड़ दी और पूरी तरह पत्रकारिता, साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन के लिए समर्पित हो गए। इसी वर्ष कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' का संपादन-प्रकाशन आरंभ किया। १९१६ के लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन के दौरान माखनलालजी ने विद्यार्थीजी के साथ मैथिलीशरण गुप्त और महात्मा गाँधी से मुलाकात की। [2,3]महात्मा गाँधी द्वारा आहूत सन १९२० के 'असहयोग आंदोलन' में महाकोशल अंचल से पहली गिरफ्तारी देने वाले माखनलालजी ही थे। सन १९३० के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी उन्हें गिरफ्तारी देने का प्रथम सम्मान मिला। उनके महान कृतित्व के तीन आयाम हैं : एक, पत्रकारिता- 'प्रभा', 'कर्मवीर' और 'प्रताप' का संपादन। दो- माखनलालजी की कविताएँ, निबंध, नाटक और कहानी। तीन- माखनलालजी के अभिभाषण/ व्याख्यान।[4]

१९४३ में उस समय का हिन्दी साहित्य का सबसे बड़ा 'देव पुरस्कार' माखनलालजी को 'हिम किरीटिनी' पर दिया गया था। १९५४ में साहित्य अकादमी पुरस्कार की स्थापना होने पर हिंदी साहित्य के लिए प्रथम पुरस्कार दादा को 'हिमतरंगिनी' के लिए प्रदान किया गया। 'पुष्प की अभिलाषा' और 'अमर राष्ट्र' जैसी ओजस्वी रचनाओं के रचयिता इस महाकवि के कृतित्व को सागर विश्वविद्यालय ने १९५९ में डी.लिट्. की मानद उपाधि से विभूषित किया। १९६३ में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया। १० सितंबर १९६७ को राजभाषा हिंदी पर आघात करने वाले राजभाषा संविधान संशोधन विधेयक के विरोध में माखनलालजी ने यह अलंकरण लौटा दिया। १६-१७ जनवरी १९६५ को मध्यप्रदेश शासन की ओर से खंडवा में 'एक भारतीय आत्मा' माखनलाल चतुर्वेदी के नागरिक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। तत्कालीन राज्यपाल श्री हरि विनायक पाटसकर और मुख्यमंत्री पं॰ द्वारकाप्रसाद मिश्र तथा हिंदी के अग्रगण्य साहित्यकार-पत्रकार इस गरिमामय समारोह में उपस्थित थे। भोपाल का माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय उन्हीं के नाम पर स्थापित किया गया है। उनके काव्य संग्रह 'हिमतरंगिणी' के लिये उन्हें १९५५ में हिंदी के 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।[5]

- हिमकिरीटिनी, हिम तरंगिणी, युग चारण, समर्पण, मरण ज्वार, माता, वेणु लो गूंजे धरा, बीजुरी काजल आँज रही आदि इनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं।
- कृष्णार्जुन युद्ध, साहित्य के देवता, समय के पाँव, अमीर इरादे :गरीब इरादे आदि इनके प्रसिद्ध गद्यात्मक कृतियाँ हैं।[1,2]

परिणाम

माखनलाल चतुर्वेदी (Makhanlal Chaturvedi) वो शख्सियत थे, जिनके नाम पर बने विश्वविद्यालय में पढ़कर आज भी युवा कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। इससे पहले उनकी रचनाओं के बारे में जानें, उनका जीवन परिचय जानना बेहद ज़रूरी है।
ओजपूर्ण भावनात्मक शैली में लिखने वाले माखनलाल चतुर्वेदी (Makhanlal Chaturvedi) का जन्म 1889 को मध्यप्रदेश में हुआ। वहीं उनकी मृत्यु 1986 में हुई। उन्होंने अपने जीवन काल में प्रभा और कर्मवीर का संपादन भी किया। उनकी प्रमुख रचनाओं में नागार्जुन युद्ध, हिमकिरीटीनी, अमीर इरादे-गरीब इरादे, हिम तरंगिणी, समय के पांव, युगचरण, साहित्य के देवता, समर्पण, बीजुरी काजल आंज रही, मरण ज्वार, रेणु लो गूंजे धरा, मरण ज्वार प्रमुख हैं। साहित्यिक योगदान के लिए उन्हें 1963 में पद्मभूषण, 1955 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1943 में देव पुरस्कार से सम्मानित किया गया।[10,11]

बचपन में उन्होंने बांग्ला, हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती के साथ संस्कृत भाषा की शिक्षा हासिल की। देश को आजादी दिलाने में उन्होंने अहम भूमिका निभाई और राष्ट्रीय आंदोलनों का हिस्सा भी रहें। उनके काव्य में आप देश के प्रति प्रेम, समर्पण का भाव, त्याग और बलिदान को महसूस कर सकते हैं।

‘जवानी’ के जरिए युवाओं में भरा जोश
प्राण अन्तर में लिये, पागल जवानी।
कौन कहता है कि तू विधवा हुई, खो आज पानी?
चल रही घड़ियाँ, चले नभ के सितारे, चल रही नदियाँ,
चले हिम-खण्ड प्यारे; चल रही है साँस,
फिर तू ठहर जाये? दो सदी पीछे कि तेरी लहर जाये?
पहन ले नर-मुंड-माला, उठ, स्वमुंड सुमेरु कर ले,

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

भूमि-सा तू पहन बाना आज धानी:
प्राण तेरे साथ हैं, उठ री जवानी!
ये पंक्तियां माखनलाल चतुर्वेदी (Makhanlal Chaturvedi) के काव्य 'जवानी' से ली गई है। 'जवानी' कविता हिमकिरीटिनी काव्य संग्रह में है। इससे कवि देश के युवाओं में जोश भरते हुए उन्हें देश के लिए कुछ कर गुज़रने के लिए प्रेरित करते हैं। कवि कहते हैं कि "युवाओं की पागल जवानी, तुम उत्साह और ताकत से भरे हुए हो। कौन कहता है कि तुमने अपनी सबसे कीमती चीज यानि 'तेज' (पति) को खो दिया है और तुम विधवा हो गए हो। मैं आज जहां भी देखता हूं, वहां तेज ही तेज है। समय नहीं रुका है, वो चल रहा है। तारे भी चल रहे हैं। नदियां भी बह रही हैं, पहाड़ के टुकड़े भी अपनी चोटियों से खिसक रहे हैं। जिंदा लोगों की सांस भी चल रही है... जब सब कुछ चल रहा है, ऐसे में ये कैसे हो सकता है कि तुम रुक जाओ? अगर तुम रुक गए तो तुम समय से पीछे चले जाओगे। यदि जवान लोग ही आलस करेंगे, तो देश की प्रगति रुक जाएगी और पीछे चली जाएगी।"

'प्यारे भारत देश' में मातृभूमि का किया गुणगान
"वेदों से बलिदानी तक जो होड़ लगी,
प्रथम प्रभात किरण से हिय में ज्योत लगी।
उतर पड़ी गंगा खेतों खलिहानों तक,
मानो आँसू आये बलि-मेहमानों तक।
सुख कर जग के क्लेश,
प्यारे भारत देश।"
अपनी कविता 'प्यारे भारत देश' में माखनलाल चतुर्वेदी ने देश का गुणगान किया है।[10] इन पंक्तियों के ज़रिए वे देश की समृद्ध संस्कृति के बारे में, राजनीति के साथ उत्तर से लेकर दक्षिण तक के भौगोलिक विस्तार के बारे में बताया है। कवि इन पंक्तियों के ज़रिए बताते हैं कि "बलिदान देना हमारी संस्कृति में कोई नई बात नहीं है। वेद काल से ही संस्कृति की रक्षा के लिए लोग बलिदान देते आ रहे हैं। जिस प्रकार सुबह की पहली किरण एक उम्मीद लेकर आती है, उसी तरह देश के युवा भी रौशनी की तरह हैं। गंगा हमारे खेतों को सींच रही है।" वे प्यारे देशवासियो को कहते हैं कि "जितनी परेशानी है वो मिट जाए और आप सभी सुखी-सुखी जीवन-यापन करें।"
'मुक्ति का द्वार' में देशवासियों की मुक्ति की करते हैं कामना
अरे कंस के बंदी-गृह की,
उन्मादक किलकार।
तीस करोड़ बंदियों का भी
खुल जाने दे द्वार।
माखनलान चतुर्वेदी के काव्य में देशभक्ति की भावना के साथ भक्ति भावना भी है। उनकी रचनाओं में श्री कृष्ण के प्रति भक्ति झलकती है। जब हम उनकी लिखी कविताओं को पढ़ें, तो लगता है मानो भगवान कृष्ण के प्रति उनकी भक्ति भावना और राष्ट्र के प्रति प्रेम, एक हो गया है। ऊपर लिखी पंक्तियों की बात करें, तो ये 'मुक्ति का द्वार' कविता से ली गई हैं। इसे कवि ने गुलाम भारत के समय में लिखा था। वहीं वे देश की जनता को गुलाम की तरह देखते हैं, जिसकी आबादी करीब 30 करोड़ है। इन गुलाम लोगों के आजाद होने की कामना वे प्रभु श्री कृष्ण से करते हैं।

निष्कर्ष

माखन लाल चतुर्वेदी अपने युग के हिन्दी साहित्य के बेहद लोकप्रिय कवियों में विशेष स्थान रखते हैं। द्विवेद्वी युग व छायावाद युग से साहित्य रचना का प्रारंभ कर देशभक्ति के रस-रंग में रचे-पगे कवि की रचनाओं में युग प्रवृत्तियों का अधिक प्रभाव न होकर अपनी मौलिक पहचान अधिक दिखाई दी। इनकी कविताओं ने आज़ादी के आन्दोलन के दौरान हज़ारों-लाखों युवाओं में विदेशी शासन के जुए को उखाड़ फैंकने के लिए ऐसा असाधारण जोश भरा कि वे आन्दोलन के महानायक महात्मा गाँधी के नेतृत्व में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए अभूतपूर्व रूप से तैयार हो गए। आजीवन देशसेवा के लिए अनन्य रूप से समर्पित माखन लाल चतुर्वेदी लोकमान्य तिलक के संकल्प 'आज़ादी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' से अभिभूत हो सच्चे मन से देश के प्रति आजीवन समर्पित रहे।[9]

त्याग एवं देशभक्ति के पर्याय पण्डित माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म अप्रेल 4, 1889 को होशंगाबाद मध्यप्रदेश के बाबई में नन्द लाल चतुर्वेदी के घर हुआ। इनका परिवार राधाबल्लभ सम्प्रदाय को मानता था। इनके पिता नन्द लाल चतुर्वेदी वहीं बाबई की गांव पाठशाला में अध्यापक थे। बचपन से कमज़ोर काया वाले माखन लाल अक्सर बीमारियों से लड़ते रहते। भक्तिरस में रचे परिवार के संस्कारों से ही शायद प्रेरित हो बचपन में नृसिंह मंदिर के सामने वाले मैदान में होने वाली रामलीला में राम या लक्ष्मण की भूमिका भी कई बार निभाई। यही नहीं अपने संघर्षशील बचपन में मंदिर की गौवें चराने के लिए नर्मदा किनारे जाते। पन्द्रह वर्ष की आयु में ही स. 1930 में इनका विवाह बाबई की ही नौ वर्षीय बाला ग्यारसी बाई से हुआ तथा एक पुत्री भी हुई किन्तु वह अल्पायु में ही चल बसी।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

ग्यारसी बाई अक्सर बीमार रहती, अंततः सन 1914 में उनका भी देहांत हो गया। रिश्तेदारों, मित्रों व शुभचिंतकों ने पुनः विवाह की सलाह दी किन्तु इन्हों ने उस सलाह को अस्वीकार कर आजीवन अकेले ही जीवन जीने का निर्णय लिया।[7,8]
माखन लाल की प्रारम्भिक शिक्षा अपनी बुआ के यहां रहकर तिमरनी में हुई। प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद वापस घर आ गए और घर पर रह कर ही संस्कृत, बंगला, गुजराती व अंग्रेज़ी सीखी। माखन लाल चतुर्वेदी का कार्यक्षेत्र छोटी वय: से ही प्रारम्भ हो गया जिसका प्रमाण; कैशोर्य व युवा-अवस्था की सन्धि-वय:में ही 16 वर्ष की उम्र में अध्यापन-कार्य शुरू कर के दिया। वर्ष 1908 में माधव सप्रे द्वारा संचालित 'हिंद केसरी' ने एक विषय "राष्ट्रीय आन्दोलन और बहिष्कार' पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की जिसमें प्रथम पुरस्कार अर्जित किया, यही नहीं माधव राव सप्रे ने विशेष रूप से लेख की प्रशंसा करते हुए रचनाकार में पत्रकारिता की अपरिमित संभावनाएं होने की पुष्टि की जो आगे चल कर सही सिद्ध हुई। उन्हीं दिनों खंडवा के हिन्दी-प्रेमी कालू राम गगराडे हिन्दी में पत्रिका आरम्भ करने की सोच रहे थे। 'प्रभा' हिन्दी पत्रिका का शुभारम्भ अप्रेल, 1913 को माखन लाल चतुर्वेदी के सम्पादन में किया गया और तब वे अध्यापन की नौकरी छोड़ पूरी तरह से पत्रकारिता में जुट गए। उस समय देश में क्रांतिकारी गतिविधियाँ चरम पर थी। जलियांवाला बाग की घटना से पूरा देश हिला हुआ था।[5,7] चतुर्वेदी भी राष्ट्रीय आंदोलन, साहित्य-रचना और पत्रकारिता में पूरी लगन से समर्पित हो गए। इत्तिफ़ाक़ से गणेश शंकर विद्यार्थी ने इसी वर्ष कानपुर से 'प्रताप' साप्ताहिक पत्रिका का सम्पादन व प्रकाशन आरम्भ किया और पत्रकारिता के कारण ही इनकी गणेश शंकर विद्यार्थी से अच्छी मित्रता हो गई। सन 1916 में गणेश शंकर विद्यार्थी के साथ लखनऊ काँग्रेस अधिवेशन में गए जहाँ मैथिली शरण गुप्त तथा महात्मा गांधी जी से मुलाकात हुई तो अपने कार्यों व उद्देश्यों को बताया कि किस तरह से वे भी राष्ट्रीय आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़े हैं। सन 1919 में जबलपुर से 'कर्मवीर' का आरम्भ भी माखन लाल चतुर्वेदी के सम्पादन कार्य में हुआ और सन 1924 में जब गणेश शंकर विद्यार्थी की गिरफ़्तारी हुई तब 'प्रताप' का सम्पादन कार्यभार भी कुशलतापूर्वक सम्भाला। उन्होंने बेहद निडरता, साहस व परिष्कृत पत्रकारिता का परिचय देते हुए 'प्रभा', 'कर्मवीर', 'प्रताप' पत्रों का ज़ोरदार सम्पादन व संचालन किया। वे वास्तव में लोकमान्य तिलक की ओजस्वी विचारधारा एवं महात्मा गाँधी के अहिंसक प्रतिरोध व सत्याग्रह-अनुष्ठान का अनोखा सम्मिश्रण थे। स्वतंत्रता आन्दोलन में उनकी निरंतर सक्रिय भूमिका रही, महात्मा गांधी द्वारा संचालित असहयोग आंदोलन में महाकोशल अंचल में सक्रिय रहते हुए 1920 में सबसे पहली गिरफ़्तारी देने का सम्मान प्राप्त किया। इसी प्रकार सन 1930 में भी गांधी जी के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी पहली गिरफ़्तारी इन्होंने ही दी। ब्रिटिश शासन काल में राष्ट्र को देशप्रेम से तरंगित कर देने वाली 'पुष्प की अभिलाषा' कविता की सृष्टि जेल-अवधि के दौरान ही की गई थी। वे सरस्वती के ऐसे अथक साधक रहे जिनकी रचनाएँ भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्र-गौरव से पूरी तरह अनुप्राणित रही हैं। उनकी पहली रचना 'रसिक मित्र' ब्रज भाषा में प्रकाशित हुई। हिन्दी के 'छायावादी सोपान' में भी उनका योगदान उल्लेखनीय रहा है। आरम्भिक रचनाओं में संस्कारजन्य भक्ति व आध्यात्मिकता-भावों युक्त कविताओं में छायावादी कवियों की शिल्प-शैली का प्रभाव दिखाई पड़ता है। करुण प्रार्थनाओं व आर्त-भरी मनुहार में वैयक्तिक न होकर सामूहिकता, समग्रहित-कामनाएं ज़्यादा झलकती हैं। इन कविताओं में जो स्तुति-स्तोत्र की शैली दिखाई पड़ती है वह कहीं तो छायावादी प्रभाव की देन हो सकती है या फिर परिवारगत वैष्णव परम्परा का प्रभाव। लेकिन इनमें छिपी नैतिक भावभूमि ऐसी समूह-चेतना की अभिव्यक्ति करती है जो किसी सम्प्रदाय, ख़ेमे या धारा से न बँधकर अपनी अलग मौलिक भाव-भूमि को दर्शाती है और वह भावभूमि है राष्ट्र और राष्ट्रीयता के लिए समर्पण। इसमें कोई दो राय नहीं कि कविता में 'राष्ट्रीय धारा' व 'हृदयवाद' के वे जनक एवं पोषक रहे। कविता, नाटक, पत्रकारिता, निबंध के क्षेत्र में वे निरंतर इसी तथ्य के लिए सक्रिय रहे।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण सरकारी पद अस्वीकार कर दिए। इस विषय में महादेवी वर्मा का एक चर्चित किस्सा पढ़ने को मिला था जिसका ज़िक्र वे माखनलाल चतुर्वेदी के विषय में बात चलने पर अक्सर अपने मित्रों, श्रोताओं को बताया करती कि "स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब मध्य प्रदेश राज्य गठित हुआ तो सरकार बनाने के लिए तीन नामों का चुनाव किया गया। माखन लाल चतुर्वेदी, द्वारका प्रशाद मिश्रा व रविशंकर शुक्ला। लेकिन इन में से किसी एक नाम पर सर्व सहमति नहीं बन रही थी तो एक सुझाव के अनुसार उन तानों के नाम काग़ज़ की एक-एक पर्ची पर लिख कर उनकी पुड़िया बनाई गई। फिर उनको इकट्ठा कर खूब फैंट कर एक पुड़िया निकाली गई। जब उसे खोला गया तो माखन लाल चतुर्वेदी का नाम पर्ची पर लिखा था। वहाँ उपस्थित नेताओं व जानकारों को उन का नाम जान कर बड़ी खुशी हुई कि वे जल्दी से उनके निवास पर पहुँचे और बड़े ख़ुश होते हुए उन्हें मुख्यमन्त्री के पद पर चुने जाने की वधाई दी। सुनते ही उन्हें गुस्सा आया और डाँटते हुए से कहने लगे, "मैं एक शिक्षक और साहित्यकार होने के नाते देवगुरु के पद पर पहले से ही हूँ और तुम लोग मुझे देवराज बना कर मेरी अवनति पर वधाई दे रहे हो।" ऐसे कह कर उन्होंने मुख्यमंत्री का पद ठुकरा दिया और तब रवि शंकर शुक्ल को मुख्य मंत्री बनाया गया। प्रलोभन, धन-लिप्सा, पद-आकर्षण आदि से वे कोसों दूर रहे। वे गाँधीवादी दर्शन के माध्यम से सामाजिक न्याय, समानता व विकास करने के प्रबल पोषक एवं समर्थक थे।[10]

काव्य भाषा

इनकी भाषा शैली सरल, ओजपूर्ण, ज्वालामुख-सी धधकती हुई हुंकार-पौरुष से परिपूर्ण है तो कहीं-कहीं करुणा-भरी, दर्द में मनुहार करती-सी भी है। वे काव्य भाषा के स्तर पर कहीं तो कहीं करुणा, कातरता से कान्हा की तरह लगते हैं। भाषा के ये विरोधी भाव वस्तुतः संक्रमणकालीन भारतीय समाज की विषमताओं-विरोधों की यथार्थ अभिव्यक्ति का समन्वय ही हैं व ऐसी भाषा शैली ने ही उन्हें जन-सामान्य में "एक भारतीय आत्मा' के दर्जे पर प्रतिष्ठित किया। इसके अलावा विद्वत जन उनकी भाषा शैली पर बेडौल और कहीं-

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 6, June 2023 |

कहीं व्याकरण की त्रुटियों वाली, कहीं कठोर संस्कृत शब्दावली, कहीं ठेठ स्थानीय शब्दों की भरमार से भाषा सहज नहीं हो पाती। किन्तु यह भी एक तथ्य है कि अपनी भावाभिव्यक्ति को हर तरह से सम्प्रेषणीय बनाने के उद्देश्य से ही वे भाषा का प्रयोग बख़ूबी करते हैं, हर ख़तरे को उठा कर भी कहीं-कहीं व्याकरणिक नियमों से भी समझौता करते दिखाई पड़ते हैं।
माखन लाल चतुर्वेदी का रचना संसार उनके काव्य-संसार के तीन आयाम हैं ; पहला पत्रकारिता , दूसरा साहित्यिक रचनाएँ और तीसरा उनके अभिभाषण और व्याख्यान।[11]

साहित्यिक रचनाएँ:: हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिणी, युग चरण, समर्पण, मरण ज्वार, माता, वेणु लो गूंजे धरा, बिजुरी काजल आज रही, कृष्णार्जुन युद्ध (नाटक), साहित्य देवता, अमीर इरादे-गरीब इरादे आदि हैं।

सम्मान : वर्ष 1927 में सम्पादक सम्मेलन के अध्यक्ष बने तथा 1943 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर चुने गए। माखन लाल चतुर्वेदी को 'एक भारतीय आत्मा" के रूप में जाना जाता है। उन्हें 1943 में हिन्दी का सर्वोत्तम पुरस्कार 'देव पुरस्कार' हिमकिरीटिनी' पर मिला, 1955 में भारतीय साहित्य अकादमी की स्थापना हो जाने पर इन्हें ' 'हिमतरंगिणी' पर पुरस्कृत किया गया। सागर विश्वविद्यालय से देश भक्ति पूर्ण काव्य रचना के लिए इन्हें डी. लिट की मानद उपाधि प्रदान की गई। कालान्तर में वर्ष 1963 में इनकी अमूल्य सेवाओं व राष्ट्र तथा समाज के प्रति नि:स्वार्थ समर्पण-भावना को दृष्टिगत रखते हुए 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया। किन्तु 10 सितम्बर, 1967 को राष्ट्रभाषा हिन्दी पर -राजभाषा संविधान संशोधन विधेयक आने पर नाराज़गी में इन्होंने वह पुरस्कार लौटा दिया। 16-17 जनवरी 1965 को मध्य प्रदेश प्रशासन ने खांडवा में "एक भारतीय आत्मा" के नाम से इनके सम्मान में समारोह का आयोजन किया। माखन लाल चतुर्वेदी, पत्रकारिता विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है। इस अद्वितीय राष्ट्र-सेवी "एक भारतीय आत्मा' का निधन 30 जनवरी, 1968 में हुआ।[9,11]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "पत्रकारिता की कालजयी परंपरा" (एसएचटीएमएल). बीबीसी. मूल से 15 अगस्त 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २२ दिसंबर २००८. ।
2. ↑ Sārasvata, Gaṇeśadatta (1978). Sāhityika nibandha. Vidyā Vihāra. यह वर्णन कवि की सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का परिचायक है। इस प्रकार हम देखते हैं कि चतुर्वेदी जी सच्चे अर्थों में युग चारण हैं। उन्होंने आजीवन राष्ट्रीयता की अलख जगाया । उनकी वाणी राष्ट्र के मर्म की वाणी बन गई है । आधुनिक राष्ट्रीय काव्यधारा में बलि पत्थी युग - तारुण्य के ज्योति पुरुष के रूप में वे सर्वथा अविस्मरणीय हैं ।
3. ↑ "पंडित माखनलाल चतुर्वेदी". हिन्दिनी. मूल से 7 अक्तूबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २२ दिसंबर २००८. ।
4. ↑ "माखनलाल चतुर्वेद□ : बहुआयाम□ व्यक्तित्व". वेबदुनिय□. मूल (एचटीएम) स□ 22 दिसंबर 2008 क□ पुरालेखित. अभिगमन तिथ□ २२ दिसंबर २००८. ।
5. ↑ "माखनलाल चतुर्वेदी". अनुभूति. मूल (एचटीएम) से 24 मार्च 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २२ दिसंबर २००८.
6. कविता कोश में माखनलाल चतुर्वेदी
7. एक भारतीय आत्मा यादों के झरोखे से (जागरण)
8. माखनलाल चतुर्वेदी : भारतीय आत्मा (विजयदत्त श्रीधर)
9. bahadur singh.htm स्वाधीनता के असाधारण बिम्ब हैं दद्दा (डॉ॰ विजय बहादुर सिंह)
10. माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली (गूगल पुस्तक)
11. समय के पाँव (गूगल पुस्तक ; लेखक - माखनलाल चतुर्वेदी)

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com